आचार्य शुभचन्द्र

जीवन-परिचय : शुभचन्द्र नाम के अनेक आचार्य हुए हैं। हम यहाँ 'ज्ञानार्णव' ग्रन्थ के रचयिता आचार्य शुभचन्द्र का परिचय दे रहे हैं।

ये शुभचन्द्र किस संघ या गण के थे और इनकी गुरु परम्परा क्या थी—इसके सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी प्राप्त नहीं होती, परन्तु विश्वभूषण भट्टारक ने 'भक्तामरचरित्र' नामक संस्कृत ग्रन्थ की उत्थानिका में शुभचन्द्र और भर्तृहरि की एक लम्बी कथा दी है। कथानुसार—शुभचन्द्र तथा भर्तृहरि उज्जयिनी के राजा सिन्धुल के पुत्र थे और सिन्धुल के पैदा होने के पहले उनके पिता सिंह ने मुञ्ज को एक खेत में पड़े हुए देखा और उसे पाल लिया था। सिंह ने उस पुत्र का नाम मुञ्ज रखा। मुञ्ज ने वयस्क होकर थोड़े ही दिनों में सकल शास्त्र और कलाओं का अध्ययन कर लिया। तदनन्तर महाराज ने रत्नावली नामक कन्या के साथ उसका विवाह कर दिया। कुछ दिनों के अनन्तर महाराज सिंह की रानी ने गर्भ धारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम सिन्धुराज रखा गया। सिन्धुराज के वयस्क होने पर मृगावती नामक राजकन्या से उसका विवाह हुआ। कुछ समय बाद इन दोनों के यहाँ दो पुत्रों का जन्म हुआ। ज्येष्ठ का नाम शुभचन्द्र और कनिष्ठ का नाम भर्तृहरि रखा गया। बचपन से ही दोनों तत्त्वज्ञानी थे। कुछ समय बाद इन दोनों को ज्ञात हुआ कि राजा मुञ्ज राज्य के लोभ से हमारा वध करना चाहते हैं तो वे दोनों संसार से विरक्त हो वन की ओर चल पड़े।

महाबुद्धिमान शुभचन्द्र ने मुनिराज के समक्ष दिगम्बरी दीक्षा धारण कर ली और घोर तपस्या करने लगे। पर भर्तृहरि एक तपस्वी की सेवा में लग गये, उन्होने बारह वर्ष तक अनेक विद्याओं की साधना की। उन्होंने तप द्वारा सौ विद्याएँ और रसतुम्बी प्राप्त की। इस रस के माध्यम से ताँबा सुवर्ण हो जाता था। भर्तृहरि ने स्वतन्त्र स्थान में रसतुम्बी के प्रभाव से अपना महत्त्व और अपना नाम बनाया।

एक दिन भर्तृहरि अपने भाई शुभचन्द्र के पास आए, और उन्हें अपनी विद्या

और तप का महत्त्व बताने लगे, परन्तु शुभचन्द्र ने भर्तृहरि को समझाते हुए कहा– यदि सोना ही बनाना श्रेष्ठ है तो हमने घर क्यों छोड़ा, इसकी प्राप्ति तो गृहस्थ में भी हो सकती थी।

शुभचन्द्र के उपदेश से भर्तृहरि भी मुनिमार्ग में दीक्षित हो गये। भर्तृहरि को मुनिमार्ग में दृढ़ करने और सच्चे योग का ज्ञान कराने के लिए शुभचन्द्र ने 'ज्ञानार्णव' ग्रन्थ की रचना की।

आचार्य शुभचन्द्र का समय विक्रम संवत् 11वीं शती है।

रचना-परिचय : शुभचन्द्र की एकमात्र रचना 'ज्ञानार्णव' है।

1. ज्ञानार्णव : ज्ञानार्णव ग्रन्थ 42 सर्गों में विभक्त है। लेखक ने इसके विषय को महाकाव्य के समान सर्गों में विभक्त किया है। इस ग्रन्थ में पाँच महाव्रत, तप और ध्यान का वर्णन किया है। आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान इन चारों का वर्णन विस्तार से एवं सरल भाषा में किया गया है। ध्यान के विषय को समझने के लिए यह ग्रन्थ विशेष महत्त्वपूर्ण है।